Govt. Digvijay PG Autonomous College

Rajnandgaon (C.G.)

Department of Geography

Annual Report

2023-24

Govt. Digvijay College Rajnandgaon (C.G.)
Department of Geography
Academic Calendar 2023-24

S.No.	Proposed Date/ Month	Proposed Activity	Activity Carried Out	Date of Execution
01	May-June 23	1. New Syllabus as per NEP 2.Any Change in MA Syllabus - Board of Study Meeting	1. New Syllabus for – BA I, II, III and IV semesters 2. No Change in MA Syllabus	Board of Study Meeting held on 11 May
02	11 July 23	World Population Day	Dr. S. Jenamani organized World Population Day	11 July
03	Research	Minor Research Project Proposal	State Planning Commission Raipur	21 August 2023
04	5 September	Teachers' Day	Organized by the PG Students	5 September
05	September	Formation of PG Geography Council	Council was formed on the Merit Basis	25 September
06	September- October 23	Seminar/ Workshop	**MA (Geography) Students' Centric Rajnandgaon District Level One Week Workshop On** Remote Sensing (R.S.) and Geographical Information system (G.I.S.) Organizing Secretary: Dr. K. N. Prasad	04-10-2023 to 11-10-2023
07	September	Tree-Plantation	**Tree Plantation near Srijan Samvaad**	17-10-20
08	October-December 2023	Digvijay Vyakhyaanmala 3 to 4 Lectures	1.Dr. (Smt) Nivedita A. Lal, Govt. Kamla Devi Rathi PG College College ,Rajnadgoan(C.G.) 2. Dr. Kuber singh Gurupanch , Bharti University Durg (C.G.) 3. Dr. K. K. Dwivedi, Govt. Kamla Devi Rathi PG College College ,Rajnadgoan(C.G.)	05-12-20 07-12-2 08-12-2
09	November-2023	Blood Donation – Dainik Bhashkar In the Memory of Its Founder- Late Shri Ramesh Ji	Shri Hemraj Daura , GL and 3 Students namely Mr. Gaurav Kumar Janghel, Mr. Madho Kunjam and Mr. Mithun Sahare donated blood	30 Novemb
10	December- January 2023-24	Extension Activity	1. Dr. K.N. Prasad, Assit. Prof. 2. Dr. Shraddha Devi sahu, GL 3. Shree Hemraj Daura GL 4. Students:-Gaurav, Yogeshwari, Kuleshwari Suruchi	08-01-202
11	February 24	Digvijay Vyakhyaanmala 3 to 4 Lectures	4. 1.Dr. (Smt) Nivedita A. Lal, Govt. Kamla Devi Rathi PG College College ,Rajnadgoan(C.G.) on **Social Change in India** 5. Dr.Shushma Yadav Govt. WWPatankar PG Girls College Durg	06-02-2 13-02-

			On **Food Security in India**	
12	February24	8 to 10 Day Geographical-Educational Tour for MA IV sem Students	Gujarat State Tour	18-02-2024 To 25-02-2024
13	February 2024	National Seminar	Situational Formation : Opening New Vistas of Research in Geo-science	01 & 02 March
14	March 2024	One Pre-Ph.D. Submission	Ku. Sandhya Sahu Guide: Dr. Jai Singh Sahu	14-03-2024
15	Publication of Dr. Krishna Nandan Prasad	Research Papers in UGC Care Journal	Spatial Analysis of the Determinants of Pneumonia Disease in North Bastar Kanker District, C.G. India, in The Indian Geographical Journal,Vol.97 (2), December, 2022, pp.141-158 ISSN No.0019-4824	12-01-2024
			Identifying the Privileged Sections Of Scheduled Tribe Population in West Bengal, India: A Search for Elitism, in Indian Journal of Spatial Science, Autumn Issue, 20231;.14(3),pp.61-68 ISSN No. 2249-3921	10-11-2023
			Anaganwadi Kendron par Matri evam Shishu Swasthya Dekhbhaal ka ek Vishleshan-Aadivaasi Kshetra Ambagarh Chowky Vikaskhand ke Vishesh Sandarbh mein, in Education and Society, Vol. 46, Issue 4, No.7, July-September 2023 ISSN No. 2278-6864	28-9-2023
			Manpur Vikaskhand Kshetra mein Swasthya Suvidhaon ka ek Mulyankan, in Education and Society, Vol. 14, Issue 4, No.7, July-September 2023 ISSN No. 2277-9809	25-12-2023

1. Board of Study Meeting

सत्र 2023-2024

सत्र 2023-24 में एम I सेमेस्टर II सेमेस्टर III सेमेस्टर व IV सेमेस्टर भूगोल विषय में पिछले वर्ष 2022-23 के सिलेबस के अनुसार रखा गया है, इसमें कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

बी.ए. I सेमेस्टर II सेमेस्टर III सेमेस्टर एवं IV सेमेस्टर का सिलेबस पाठ्यक्रम में ~~राज्य स्तर~~ सिलेबस से परिवर्तन कर नये सिरे से सिलेबस तैयार किया गया है।

(1) BA I सेमेस्टर D.S.C Course and ~~GE~~ SEC कोर्स के अन्तर्गत Geomorphology पाठ्यक्रम कुम रखा जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार BA I सेमेस्टर परिवर्तन किया जा रहा है। इसमें Course-course अध्यापन 60 घण्टे का समय होगा। इसमें आंतरिक मूल्यांकन 20 अंक एवं Term Exam 80 अंक का होगा।

(2) BA II सेमेस्टर D.S.C Course के अन्तर्गत Human Geography पाठ्यक्रम एवं प्रायोगिक विषय P-2 Basic Statistics-1 रखा गया है इसके अध्यापन में भी 60 घण्टे का आवंटित है। इसमें भी 20 अंक का आंतरिक मूल्यांकन एवं Term Exam 80 अंक का होगा।

(3) BA III सेमेस्टर D.S.C Course के अन्तर्गत Climatology & Oceanography पाठ्यक्रम एवं प्रायोगिक P-3 में Graphical Representation of ~~Data &~~ Statistical Methods Deviation-2 रखा गया है, इसके अध्यापन में भी 60 घण्टे आवंटित है इसमें भी 20 अंक आंतरिक मूल्यांकन एवं Term Exam 80 अंकों का होगा।

(4) BA IV सेमेस्टर D.S.C ~~कोर्स~~ Course के अन्तर्गत Geography of India पाठ्यक्रम एवं प्रायोगिक Map ~~[illegible]~~ रखा गया है इसमें सैद्धान्तिक के लिए 45 घण्टे तथा प्रायोगिक के लिए 15 घण्टे की कक्षाएं आवश्यक होंगी

(5) BA III एवं IV सेमेस्टर में DSE Course का विषय [illegible]
Geography एवं Resource Geography [illegible]

2. World Population day

जनसंख्या दिवस

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव की भूगोल विभाग में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित विश्व जनसंख्या दिवस ।। जुलाई 2023 पर प्राचार्य डॉ. के .एल. टांडेकर की उपस्थिति में डॉ. एस जेनामणि ने एक संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी में प्राचार्य महोदय ने जनसंख्या रूपी संसाधन के विकास संवर्धन एवं उचित उपयोग पर प्रकाश डाला वहीं डॉ. एस. जेनमनी ने जनाधिक्य निम्न जनसंख्या अनुकूलतम जनसंख्या के विभिन्न सिद्धांतों पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति तथ्यों का भौगोलिक परिपेक्ष में प्रस्तुत किया।

जनसंख्या दिवस के कार्यक्रम में डॉ. मीना प्रसाद, डॉ. राजकुमार बंजारे, डॉ. महेश श्रीवास्तव डॉ. एच. स. जैन, श्री वीरेंद्र बहादुर ठाकुर के साथ-साथ एम. ए. तृतीय सेमेस्टर भूगोल के सभी विद्यार्थियों की सक्रिय उपस्थिति रही ।

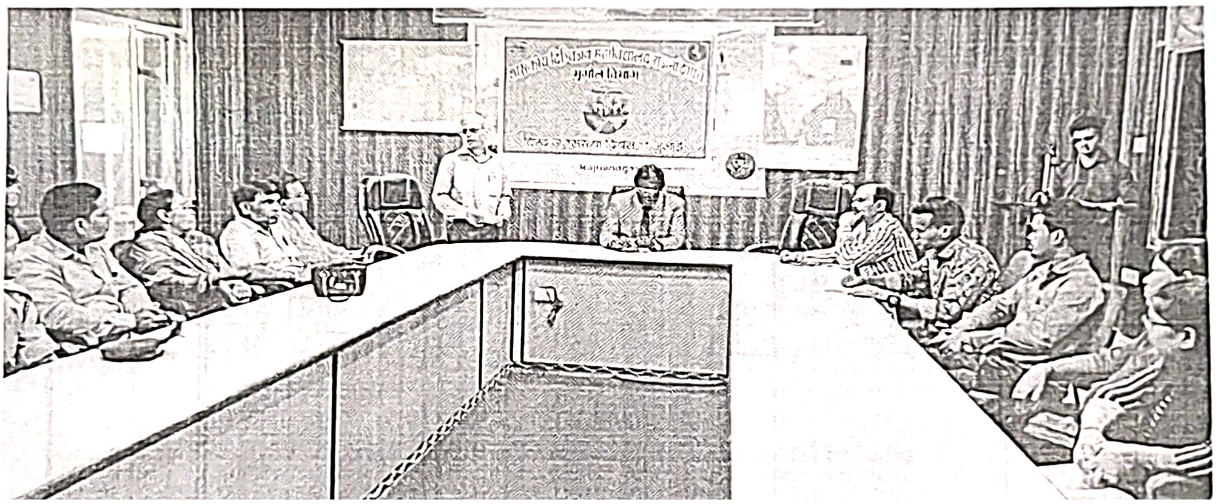

3 शिक्षक दिवस

प्रतिवेदन

05 सितंबर 2023 दिन मंगलवार को शासकीय स्नात्कोत्तर स्वसासीमहाविद्यालय राजनांदगांव के भूगोल विभाग द्वारा भारत के पूर्व राष्टपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जनम दिवस पर शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया। एम. ए. भूगोल के सभी विद्यार्थियों ने अपनी कक्षाओं को सजाया और शिक्षक दिवस के कार्यक्रम की शुरूआत मां सरस्वती की प्रतिमा के पूजा अर्चना से किया गया।समारोह में भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. के. एन. प्रसाद, सहायक प्राध्यापक डॉ. एस. जनामणि, अतिथि व्याख्ता डॉ.श्रद्धा देवी साहू, कु. सृष्टि शर्मा, लेब टेकनिशियन श्री मोहित टण्डन, श्री राहुल देवांगन तथा श्री मोहित वैषणव उपस्थित थे।सभी का स्वागत एम. ए. प्रथम एव तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों द्वारा पुष्प गुच्छ से किया गया।

कार्यक्रम की अगली कडी में विभागाध्यक्ष द्वारा शिक्षा का उद्देश्य पर प्रकाश डाला व सिखने कि प्रक्रिया पर जोर दिया। सिखने से ही व्यक्ति सही गलत का फैसला स्वयं करता है और यही आदमी को आदमी बनाता है अर्थात क्षमतावान आदमी बनाता है। इसलिए शिक्षा का सही सम्मान विद्यार्थी का ज्ञानवान होना है से अवगत कराया गया।

कार्यक्रम की अगली कडी में सहायक प्राध्ययपक डॉ. एस. जनामणि, द्वारा शिक्षक दिवस क्यों मनाते है और डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के समाज में क्या योगदान तथा उनके जीवन की विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए उनकी कडी मेहनत व समर्पण की सराहना की। अतिथि व्याख्यता डॉ. श्रद्धा देवी साहू बच्चों को सिखने के लिए प्रेरितकिया, उन्हेआनेवालीप्रतियोगीपरीक्षाओं एवंसामाजिक क्षेत्र में योगदान के लिए तैयार करना यही एक शिक्षक की आशा व कामना होती है कि उसके विद्यार्थी सफलता का परचम फहराए एव कु. सृष्टि शर्मा अतिथि व्याख्याता भूगर्भ शास्त्र द्वारा ज्यादा से ज्यादा बच्चे नेट, सेट एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग लेने पर जोर दिया गया।

कार्यक्रम का समापन एम. ए. प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों द्वारा छात्राओं के जीवन को आकार देने और उन्हे प्रेरित करने के प्रयासों के लिए शिक्षकों को धन्यवाद देने के साथ हुआ।

HAPPY
TEACHERS
DAY
By POONAM JIT. 2023.09.05 14:20

4

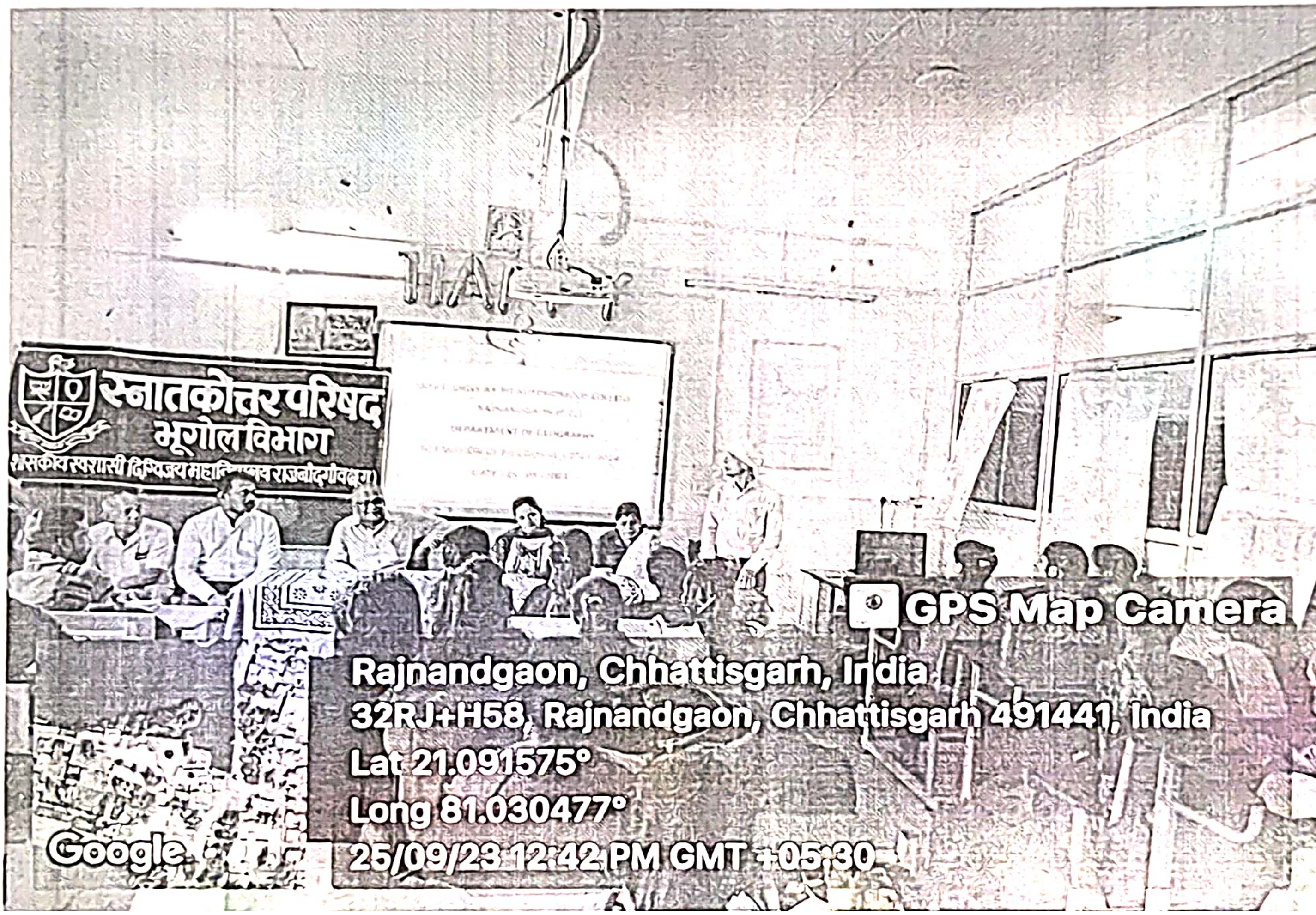
स्नातकोत्तर परिषद
भूगोल विभाग
GPS Map Camera
Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
32RJ+H58, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India
Lat 21.091575°
Long 81.030477°
25/09/23 12:42 PM GMT +05:30
Google

5. M. A. (Geography) Students-Centric Rajnandgaon District Level One Week Workshop On Remote Sensing and GIS

GOVT. DIGVIJAY PG AUTONOMOUS COLLEGE RAJNANDGAON (C.G.)

ONE-WEEK WORKSHOP
ON

REMOTE SENSING – RS
&
GEOGRAPHICAL INFORMATION SYSTEM – GIS

Date: 04 -10 -2023 to 11 -10 -2023
Time: 11.00 AM to 1.00 PM and 2.00 PM to 4.00 PM
Venue: Computer Lab of the College
Organized by
Department of Geography

PROGRAMME SCHEDULE

Date	Resource Person	Topic
04 -10 -2023	Dr. Naresh Kumar Baghmar Chief Guest & Key Speaker	GIS: Introduction, Importance and Usages
05-10 -2023	Shri Ashish Manjhi	An Overview of Interface of QGIS and Geo-Referencing
06 -10 -2023	Shri Bhagwat Kurre	QGIS Work on Google Earth
07 -10 -2023	Dr. Tisha Day Dr. A. K. Pathak	Fundamentals of GIS Application of Remote Sensing
09 -10 -2023	Dr. Priti Jaiswal	Out-put Map Generation
10 -10 -2023	Dr. Geeta Rai	Elements of Interpretation of Satellite Imagery.
11-10 -2023	Dr. Prashant Kavishwar CGCOST	GIS and RS – Future Prospect

Dr. Krishna Nandan Prasad
Organizing Secretary
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

Dr. K.L. Tandekar
Principal
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

S.No.	Areas	2004	2013

GOVT. DIGVIJAY PG AUTONOMOUS COLLEGE RAJNANDGAON (C.G.)

M.A. (GEOGRAPHY) STUDENTS' CENTRIC RAJNANDGAON DISTRICT LEVEL ONE-WEEK WORKSHOP ON REMOTE SENSING (RS) & GEOGRAPHICAL INFORMATION SYSTEM (GIS)

DATE: 04-10-2023 TO 11-10-2023

ORGANIZING SECRETARY: Dr. KRISHNA NANDAN PRASAD, HOD, DEPT.OF GEOGRAPHY

Dr. NARESH KUMAR BAGHMAR

SHREE ASHISH MANJHI

Dr. KN PRASHAD

SHRI KUMLAL SAHU

Dr. TISHA DAY AND DR AK PATHAK

Dr. PRITI JAISWAL

Dr. GEETA RAI

Dr. PRASHANT KAVISHWAR

Powered by Triple Camera 2024.01.27 15:28

10 Statistical Soft...

6. Tree Plantation

प्रेस विज्ञप्ति

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगाँव (छ.ग.) के प्राचार्य डॉ. के एल. टांडेकर के निर्देशानुसार विभागीय गतिविधि के अंतर्गत महाविद्यालय परिसर को हरा-भरा रखने के लिए वृक्षारोपण हेतु सृजन संवाद के पास स्थित वाटिका में सभी विभागों को अलग-अलग स्थान आवंटित किया गया। भूगोल विभाग को आंवटित स्थल पर वृक्षारोपण का कार्य विभागाध्यक्ष डॉ. कृष्ण नंदन प्रसाद के नेतृत्व में रबर का पौधा के साथ तुलसी, पारिजात, गुड़हल जैसे औषधीय पौधे लगाये गये। वृक्षारोपण हेतु एम.ए. (भूगोल) स्नातकोत्तर परिषद् के प्रथम व तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने समर्पण भाव से इस लघु, परन्तु अति महत्वपूर्ण कार्य को बहुत ही उत्साह से पूरा किया तथा इन पौधों की नियमित देख-रेख करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर विभाग के दोनों अतिथि व्याख्याता डॉ. श्रद्धा साहू एवं श्री हेमराज दाउरा भी उपस्थित रहे।

7. **Digvijay Vyakhyaanmala (5-8 December 2023)**

1. Dr. (Smt) Nivedita A. Lal, Govt. Kamla Devi Rathi PG College ,Rajnadgoan(C.G.)

प्रेस विज्ञप्ति

शासकीय दिग्विजय स्वशासी महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.) के भुगोल विभाग में MoU गतिविधि के अर्न्तगत आज दिनांक 05/12/2024 को शासकीय कमलादेवी राठी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय के कला संकाय के सहायक प्राध्यापक डॉ. निवेदिता ए. लाल ने दिग्विजय व्याख्यानमाला के तत्वाधान में जलवायु से संबंधित जागरुकता कार्यक्रम "Stockholm Conference" पर विस्तृत एवं सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होने व्याख्यान के दौरान बताया कि जलवायु परिवर्तन आज एक वैश्विक समस्या बन गइ है। इस व्याख्यान का लाभ एम. ए. प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर (भुगोल) के विद्यार्थियों हुआ। विद्यार्थियों ने सिर्फ गंभीर होकर महत्वपूर्ण पहलूओं को नोट किया बल्कि व्याख्यान के अन्त में सक्रिय रुप से अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए प्रश्न भी उठाया । व्याख्यान के अवसर पर डॉ कृष्ण नन्दन प्रसाद, डॉ. श्रद्धादेवी साहू , श्री हेमराज दौरा , श्री मोहित टंडन उपस्थित रहे।

2. Dr. Kuber singh Gurupanch , Bharti University Durg (C.G.)

प्रेस विज्ञप्ति

शासकीय दिग्विजय स्वशासी महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.) के भुगोल विभाग में MoU गतिविधि के अर्न्तगत आज दिनांक 07/12/2024 को भारती विश्वविद्यालय के कला संकाय के डीन डॉ. कुबेर सिंह गुरुपंच ने दिग्विजय व्याख्यानमाला के तत्वाधान में शोध प्रविधि का एक महत्वपूर्ण टॉपिक – शोध प्रतिवेदन के प्रकार पर एक सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस व्याख्यान का लाभ एम. ए. प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर (भुगोल) के विद्यार्थियों हुआ। विद्यार्थियों ने सिर्फ गंभीर होकर महत्वपूर्ण पहलूओं को नोट किया बल्कि व्याख्यान के अन्त में सक्रिय रुप से अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए प्रश्न भी उठाया । व्याख्यान के अवसर पर डॉ. श्रद्धादेवी साहू , श्री हेमराज दौरा , श्री मोहित टंडन उपस्थित रहे।

3. Dr. K. K. Dwivedi, Govt. Kamla Devi Rathi PG College ,Rajnadgoan(C.G.)

प्रेस विज्ञप्ति

शासकीय दिग्विजय स्वशासी महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.) के भुगोल विभाग में MoU गतिविधि के अर्न्तगत आज दिनांक 05/12/2024 को शासकीय कमलादेवी राठी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय के कला संकाय के सहायक प्राध्यापक डॉ. के.के. द्विवेदी ने दिग्विजय व्याख्यानमाला के तत्वाधान में जलवायु से संबंधित जागरुकता कार्यक्रम "Evidences of climate Change During The Geological and Historical Times" पर विस्तृत एवं सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होने व्याख्यान के दौरान बताया कि जलवायु परिवर्तन आज एक वैश्विक समस्या बन गइ है। इस व्याख्यान का लाभ एम. ए. प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर (भुगोल) के विद्यार्थियों हुआ। विद्यार्थियों ने सिर्फ गंभीर होकर महत्वपूर्ण पहलूओं को नोट किया बल्कि व्याख्यान के अन्त में सकिय रुप से अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए प्रश्न भी उठाया । व्याख्यान के अवसर पर डॉ कृष्ण नन्दन प्रसाद, डॉ. श्रद्धादेवी साहू , श्री हेमराज दौरा , श्री मोहित टंडन उपस्थित रहे।

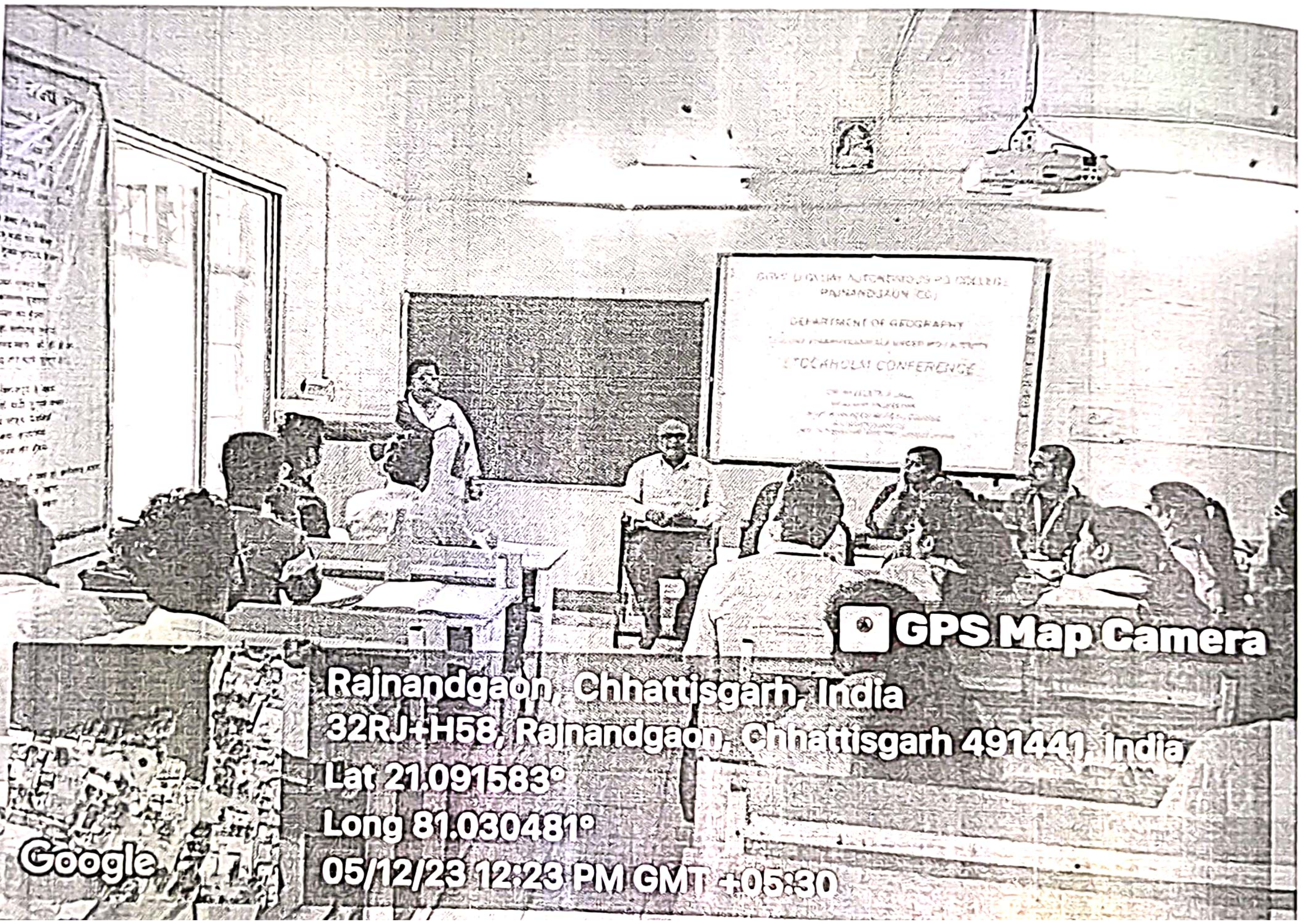

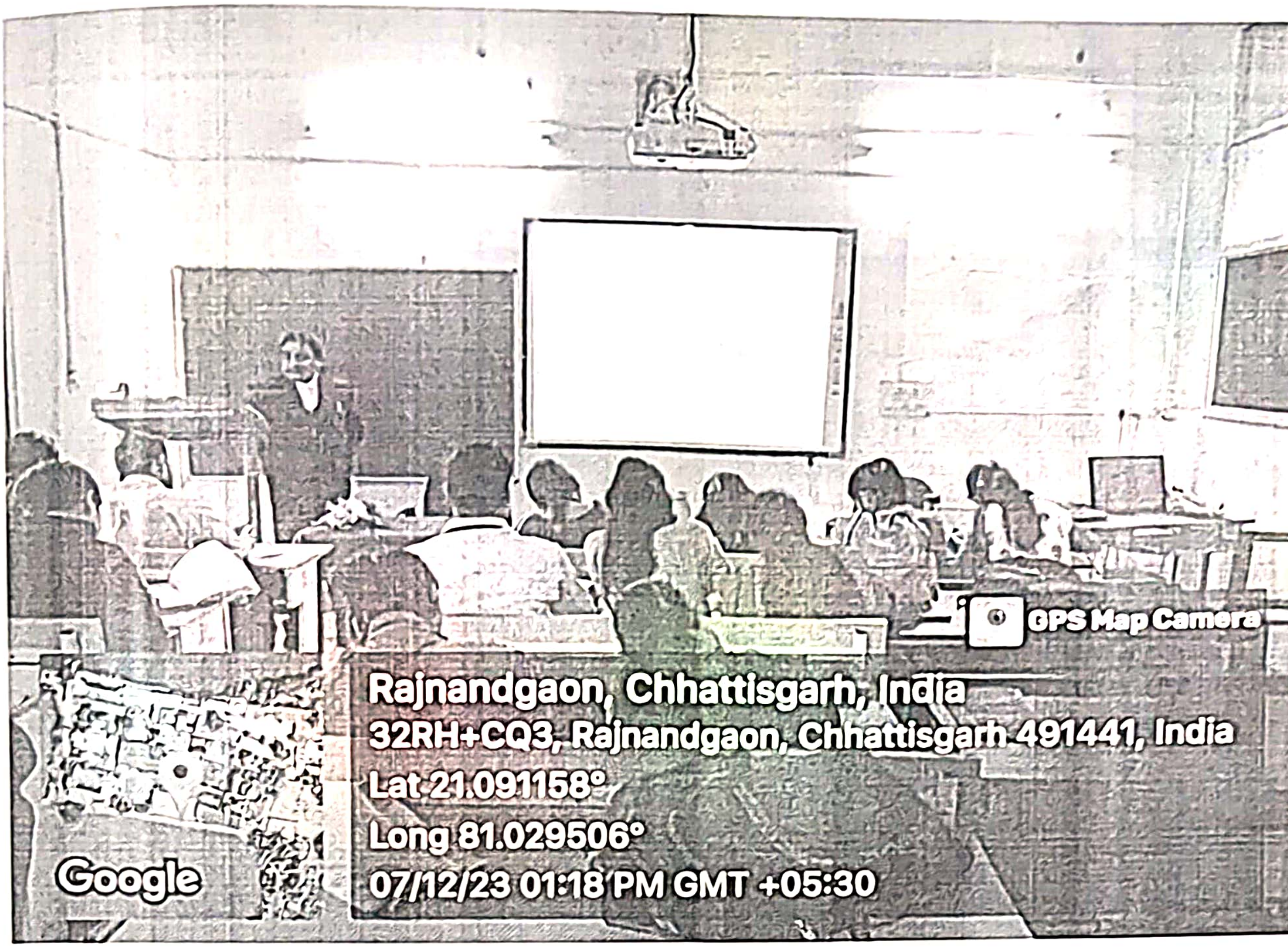
GPS Map Camera
Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
32RH+CQ3, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India
Lat 21.091158°
Long 81.029506°
07/12/23 01:18 PM GMT +05:30
Google

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
EVIDENCES OF CLIMAT
THE GEOLOGICAL &
GPS Map Camera
Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
32RJ+H58, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India
Lat 21.091562°
Long 81.030498°
08/12/23 01:14 PM GMT +05:30
Google

8. BLOOD DONATION BY TEACHER AND MA III SEM STUDENTS

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव में दैनिक भास्कर समूह द्वारा एक दिवसीय रक्तदान शिविर का आयोजन दिनांक 30/11/2023 को महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में किया गया। महाविद्यालय को भूगोल विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉ. के. एन. प्रसाद की उपस्थिति में एम. ए. के छात्र-छात्राओं ने इस यज्ञ में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। विभाग के अतिथि व्याख्याता श्री हेमराज दौरा ने भी रक्तदान कर विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का कार्य किया।

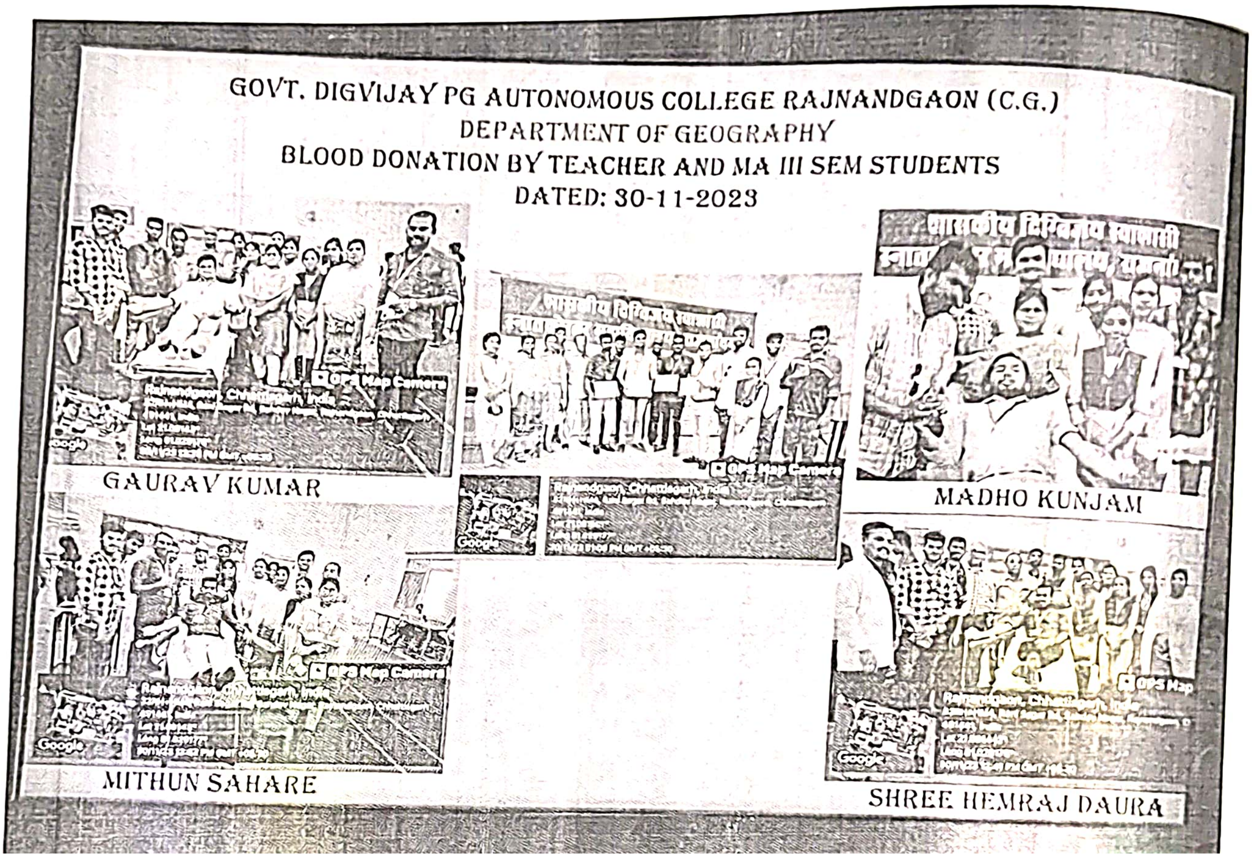

9. Extension Activity

10. Digvijay Vyakhyanmala

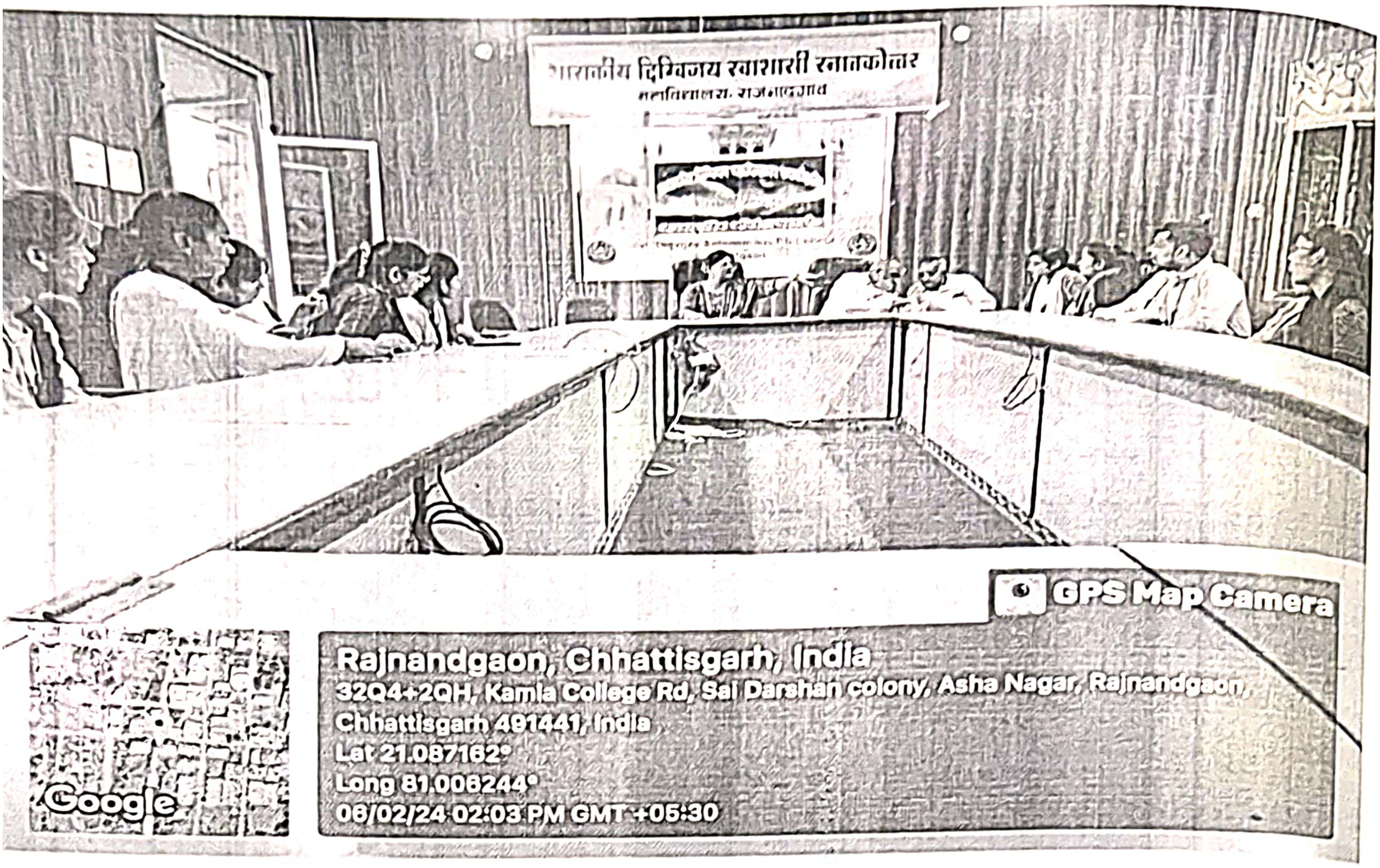

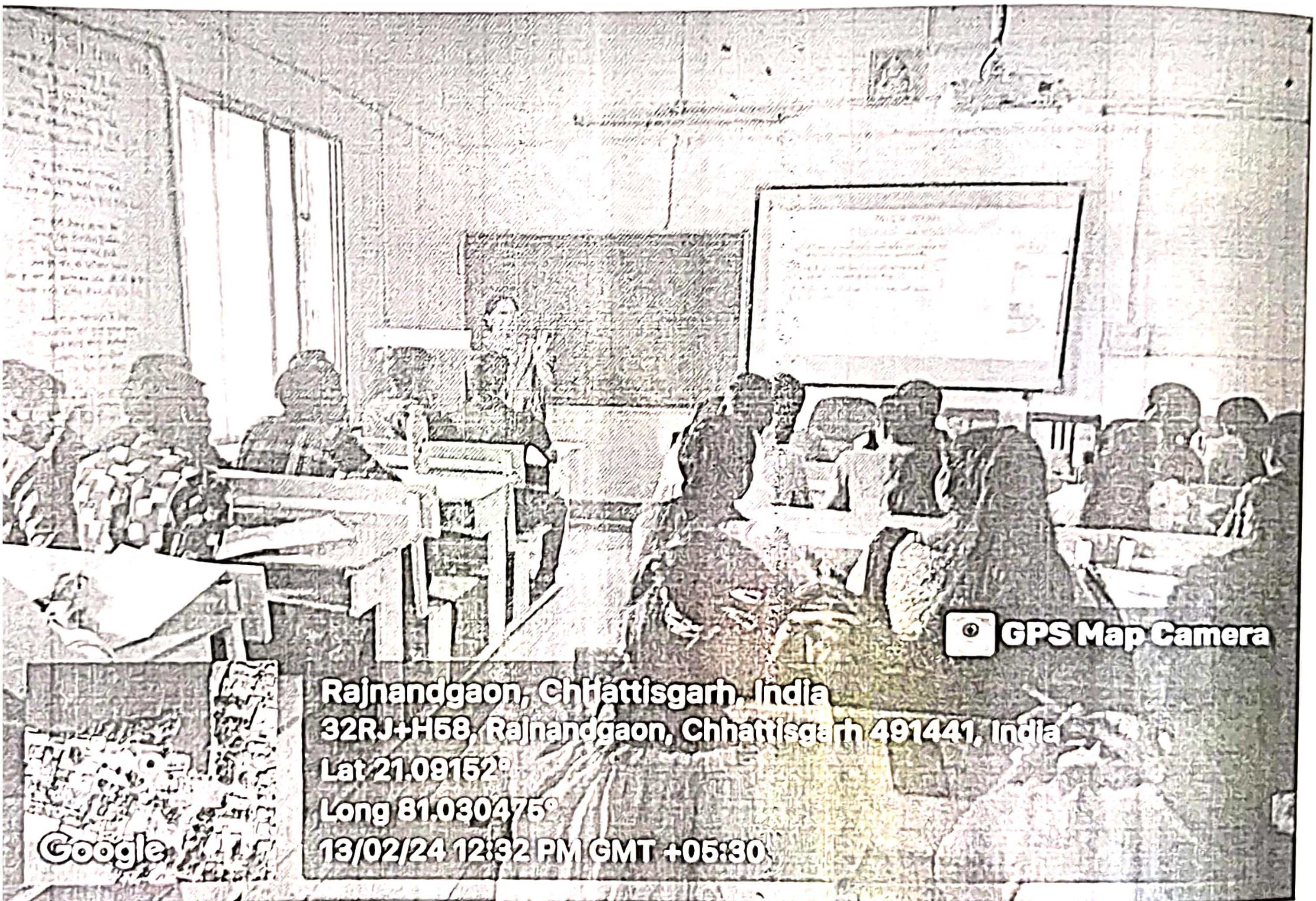

प्रतिवेदन

महत्व

भूगोल की शिक्षा में क्षेत्रीय भ्रमण का विशेष महत्व है, क्योंकि भूगोल एक क्षेत्रिय विज्ञान है इसे क्षेत्र वर्णीय विज्ञान के रूप में भी जाना जाता है। भूगोल की शिक्षा में भौगोलिक/शैक्षणिक भ्रमण एक ऐसी शिक्षा पर बोल देता है जो अधिकतम व्यवहारिक जीवन उपयोगी तथा अधिक ज्ञान प्राप्त करने में हमारी सहायता करता है। भूगोल के अध्ययन में किताबों से सिर्फ सैद्धांतिक ज्ञान ही प्राप्त हो पता है किंतु भौगोलिक/शैक्षणिक भ्रमण में इसका व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त होता है तथा इस तरह सैद्धांतिक और व्यवहारिक ज्ञान दोनों ज्ञान को प्राप्त करने पर ज्ञान की महत्ता बढ़ जाती है। क्षेत्रीय भ्रमण स्वशिक्षा पर आधारित है क्योंकि भूगोल को एक प्राकृतिक विज्ञान माना जाता है और भौगोलिक /शैक्षणिक भ्रमण के दौरान व्यक्ति प्राकृतिक वस्तुओं को देखकर ही बहुत कुछ सीख जाता है क्योंकि प्रकृति बिना कुछ कहे बहुत कुछ समझा और सिखा जाती है ।

सहायता राशि का प्रावधान

भौगोलिक/शैक्षणिक भ्रमण में अध्ययन संस्थान से दूर किसी विशेष क्षेत्र में जाकर अवलोकन किया जाता है जो कभी-कभी अधिक खर्चीला होता है। जिसके खर्च का वहन अधिकांश गरीब तबके के विद्यार्थी नहीं कर सकते हैं तथा व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं । इस समस्या से बचने व सभी छात्र-छात्राओं को ज्ञान की समान उपलब्धि हो इसके लिए भूगोल विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉ. के. एन. प्रसाद के पहल पर स्वशासी विभाग द्वारा 20000 रु. की सहायता राशि का प्रावधान किया गया।

भ्रमण क्षेत्र का चुनाव

भ्रमण क्षेत्र के चुनाव के लिए भूगोल परिषद के सदस्य व एम.ए. 4th सेमेस्टर के छात्र-छात्राओं द्वारा वाइब्रेंट गुजरात का चुनाव किया गया भ्रमण हेतु गुजरात का चयन इसलिए किया गया क्योंकि यह भारत का सबसे उभरता हुआ अर्थव्यवस्था वाला राज्य है तथा साथ ही समुद्री तटीय क्षेत्र, कच्छ का रन, सोमनाथ-ओखा पुलिन जैसे पर्यटन स्थल के साथ-साथ सोमनाथ, द्वारका, बेट द्वारका जैसे दार्शनिक स्थल भी यहां है । यह औद्योगिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा भूगर्भिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण स्थान है रखता है । अतः इस बहु विविध विशेषता रखने वाली क्षेत्र का भौगोलिक शैक्षणिक भ्रमण करना अनिवार्य हो जाता है।

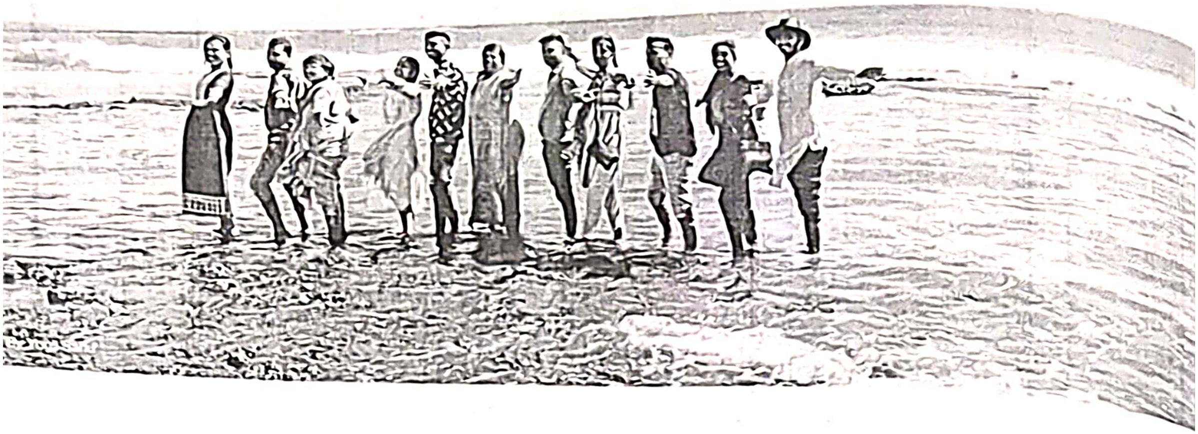

स्थिति से परिस्थिति: भागोलिक विज्ञान में बदलता अनवेशन विषय पर दिग्विजय महाविद्यालय पर संगोष्ठी

राजनांदगांव (चखा)। शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव के भूगोल विभाग द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन 01 व 02 मार्च 2024 को किया गया. इस संगोष्ठी का विषय स्थिति से परिस्थिति भागोलिक विज्ञान मे बदलता अनवेशनद् था.

कार्यक्रम के प्रथम दिवस अतिथियो के द्वारा संगोष्ठी के पत्रिका का विमोचन किया गया.कार्यक्रम के आरंभ मे संस्था प्रमुख प्राचार्य महोदय डॉ के एल टांडेकर ने संगोष्ठी की उपयोगिता एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी महत्ता पर बहुत जी संक्षिप्त एवं सारगर्भित सम्बोधन दिया. इस प्रोग्राम के कनवेनर डॉ. एस. जैनामनी सहायक प्राध्यापक,भूगोल ने कार्यक्रम के रुपरेखा का संक्षिप्त परिचय दिया, एवं अन्य जानकारी प्रोफेसर के.एल. प्रसाद ने दी। डॉ. वरुण कुमार, मुख्य अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, उद्घाटन समारोह के कीनोट स्पीकर थे. मन की बीमारी, के बारे मे उन्होंने अपनी बात बहुत ही सारगर्भित तरीके से श्रोताओं के सामने रखी.

उन्होंने मन की महत्ता पर विशेष जोर देते हुए कहा की अगर अवचेतन मन में जो विचार आते है, उसमें से अच्छे विचारों को आत्मसात करते हुए कैसे हम खुद को कैसे और बेहतर बना सकते है. मन स्थिति को बेहतर तरीके से समझाने के लिए डॉ वरुण कुमार ने कई उद्धर्णों का उदाहरण दिया जिसमें मानसिक प्रदुषण का प्रमुख कारण एक समय पर कई कार्यों को करने की असफल कोशिश करना है. मोबाइल का उपयोग करते समय ज्यादातर लोग कई दैनिक क्रियाकलापों को सम्पादित करते है जिसमे पढ़ाई, खाना, सोना आदि प्रमुख है. इसके फलस्वरूप कोई भी कार्य पूर्णतः सम्पादित नहीं हो पाती, जिससे लोगो मे तनाव, चिड़चिड़ापन जैसा माहौल बनता है.मुख्य अतिथि प्रोफेसर शांतनु पटनायक गजेंद्र चौबे यूनिवर्सिटी, अरुणाचल प्रदेश ने इम्पैक्ट ऑफ क्लाइमेट चेंज ऑन वाटर रिसोर्सेस पर अपनी बात श्रोताओं के सामने रखी. विकास से विनाश की ओर, सस्टेनेबल डेवलपमेंट जैसे प्रमुख मुद्दों पर उन्होंने काफी विस्तार से चर्चा किया. इंसान की मनोस्थिति का आधार जिन स्थिति के साथ वो वो वैसा ही व्यवहार करने लगता है.विचारों से विचारों का प्रबंधन उद्घाटन समारोह मे विज्ञान, कला एवं कॉमर्स के विभागाध्यक्ष, सहायक प्राध्यापक, शोधार्थी एवं छात्र छात्रायें उपस्थित थे.मंच संचालन डॉ अनीता साहा ने सफलता पूर्वक किया।

[illegible] 9/3/24

कॉलेज में भौगोलिक विज्ञान में बदलता अनवेशन विषय पर संगोष्ठी आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ राजनांदगांव

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के भूगोल विभाग द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन 1 व 2 मार्च को किया गया। इस संगोष्ठी का विषय स्थिति से परिस्थिति भौगोलिक विज्ञान में बदलता अनवेशन था। कार्यक्रम के प्रथम दिवस अतिथियों द्वारा संगोष्ठी के पत्रिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में प्राचार्य डॉ. केएल टांडेकर ने संगोष्ठी की उपयोगिता एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी महत्ता पर सारगर्भित संबोधन दिया। इस प्रोग्राम के कनवेनर डॉ. एस जेनामनी ने कार्यक्रम की रूपरेखा का संक्षिप्त परिचय दिया एवं अन्य जानकारी प्रो. केएल प्रसाद ने दी। मुख्य अतिथि डॉ. वरूण कुमार ने मन की महत्ता पर विशेष जोर देते कहा कि अगर अवचेतन मन में जो विचार आते हैं, उसमें से अच्छे विचारों को आत्मसात करते हम खुद को कैसे और बेहतर बना सकते है। डॉ. वरुण कुमार ने कई उद्धर्णो का उदाहरण दिया।

मुख्य अतिथि प्रो. शांतनु पटनायक ने इम्पैक्ट ऑफ क्लाइमेट चेंज ऑन वाटर रिसोर्सेस पर अपनी बात श्रोताओं के सामने रखी। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के सात सिद्धांत पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. कुबेर सिंह गुरूपंच ने बताया कि कैसे परिस्थितियां किसी इंसान की मनोस्थिति को परवर्तित करने में एक कारक का कार्य करता है। विचारों से विचारों का प्रबंधन उद्घाटन समारोह में विज्ञान, कला एवं कॉमर्स के विभागाध्यक्ष, सहायक प्राध्यापक, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। मंच संचालन डॉ. अनीता साहा ने किया। ग्रीन हाइड्रोजन के बारे में दिग्विजय कॉलेज के अतिथि व्याख्याता सृष्टि शर्मा ने अपना प्रेजेंटेशन दिया।

समस्याओं को रखा

संगोष्ठी के दूसरे दिन प्रथम सेशन में टेक्निकल सेशन का कार्यक्रम था।
जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के शोधार्थियों ने अपने पेपर प्रस्तुत किए। शोधार्थियों ने
अपने आसपास के भौगोलिक क्षेत्रों की समस्याओं, वर्तमान परिप्रेक्ष्य, विभिन्न
प्रदूषणों, जलवायु परिवर्तन एवं उनसे होने वाली समस्याओं को सबके समक्ष
रखा एवं स्नातकोत्तर के छात्र-छात्राओं को शोध के लिए प्रेरित किया। समापन
समारोह अवसर पर प्रो. वरुण कुमार ने बताया कि हमारे सोच का गहरा
प्रभाव भी आसपास के पर्यावरण पर पड़ता है। दुर्ग विश्वविद्यालय के
कुलसचिव भूपेंद्र कुलदीप ने शोध कार्यों को जिंदगी में आत्मसात करने पर
जोर दिया। प्राचार्य डॉ. केएल टांडेकर ने कहा कि आप जैसा सोचेंगे वैसा बन
जाएंगे अर्थात जैसा कर्म होगा, वैसा फल मिलेगा। समापन समारोह में
विज्ञान, कला एवं कॉमर्स के विभागाध्यक्ष, सहायक प्राध्यापक, शोधार्थी एवं
छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

हरिभूमि 9/3/24

14. Publication of the Faculty

Spatial Analysis of the Determinants of Pneumonia Disease in North Bastar Kanker District, C.G. India, in The Indian Geographical Journal, Vol.97 (2), December, 2022, pp.141-158 ISSN No.0019-4824
Identifying the Privileged Sections Of Scheduled Tribe Population in West Bengal, India: A Search for Elitism, in Indian Journal of Spatial Science, Autumn Issue, 20231;.14(3),pp.61-68 ISSN No. 2249-3921
Anaganwadi Kendron par Matri evam Shishu Swasthya Dekhbhaal ka ek Vishleshan- Aadivaasi Kshetra Ambagarh Chowky Vikaskhand ke Vishesh Sandarbh mein, in Education and Society, Vol. 46, Issue 4, No.7, July-September 2023 ISSN No. 2278-6864
Manpur Vikaskhand Kshetra mein Swasthya Suvidhaon ka ek Mulyankan, in Education and Society, Vol. 14, Issue 4, No.7, July-September 2023 ISSN No. 2277-9809

13. One Pre. Ph.D. Submission

Indian Journal of Spatial Science

EISSN: 2249 - 4316 Homepage: www.indiansss.org ISSN: 2249 - 3921

Identifying the Privileged Sections of Scheduled Tribe Population in West Bengal, India: A Search for Elitism

Dr. Somnath Majhi[1*], and Dr. Krishna Nandan Prasad[2]

[1] Assistant Teacher in Geography, Chengail Shree Vidyaniketan High School (H.S), Howrah, West Bengal
[2] Professor, Department of Geography, Govt Digvijay P.G. Autonomous College, Rajnandgaon, Chattisgarh, India

* Corresponding Author

Article Info

Article History
Received on:
24 February, 2023
Accepted in Revised Form on:
17 August, 2023
Available Online on and from:
23 September, 2023

Keywords
Scheduled Tribes,
Privileged Section,
Composite Score,
Disparity Index,
Non-farm Employment,
Socially Marginalized.

Abstract

West Bengal ranks 9th in terms of concentration of Scheduled Tribe population among the states in India. In West Bengal, about 5.80% population belongs to the Scheduled Tribe. Like the other states, West Bengal has many communities among the Scheduled Tribe population. There are 40 communities among the Scheduled Tribes in West Bengal. The major 11 communities, e.g. Santal, Oraon, Bhumij, Munda, Kora, Tamang, Lodha, Kisan, Bedia, Mahali, and Bhutia, contribute 87% of the population to the total Scheduled Tribe population in the state. In this paper, an attempt has been made to find out the privileged sections among the major Scheduled Tribe communities with the help of parameters that includes demographic, educational and occupational status. The secondary data of the census of India, 2011 has been used for the analysis. The literacy rate, female literacy rate, percentage of graduates, percentage of female graduates, and percentage of non-farm employment are very high among Tamang and Bhutia compared to other communities. After independence, various provisions were enshrined in the constitution of India for the socio-economic development of these weaker sections. But in reality, certain communities benefitted from these provisions, and others still lag.

© All Rights Reserved: ISSS 2023

Introduction

The Lokur Committee (1965) commented that primitiveness, geographical isolation, distinctive culture and backwardness are the primary criteria for selecting the Scheduled Tribes. After the independence, the term 'Adivasi', which means early settler, has been used as a generic term for all the tribes. Historically, these weaker sections are the prime victims of many socio-economic ills. The socio-economic condition of the tribal is deplorable as they were socially and culturally isolated from the rest of the people of the country (Chattopadhyay, 1980). Education is the most critical factor for ameliorating socio-economic backwardness (Chatterjee, 2011). In tribal societies, informal teaching was present for the socialization process. Occupation is one of the major key indicators to measure the economic condition. Due to primitiveness, hunting, food gathering and fishing were the major occupations that have changed through the generations. Educational and occupational status are interrelated as education provides a broader scope for choosing a profession. After the independence, various provisions were enshrined in the constitution of India for the socio-economic development of these weaker sections. But in reality, certain communities benefitted from these provisions, and others still lag.

The Scheduled Tribe population is found in every state except Punjab and Haryana. Madhya Pradesh (14.65%) constitutes the highest percentage of the Scheduled Tribe population out of the total Scheduled Tribe population in India. In this regard, West Bengal (5.07%) ranks 9th. Mizoram (94.43%) has the highest percentage of Scheduled Tribe population, whereas West Bengal has only 5.80% Scheduled Tribe population to the total population in the state. Like the Scheduled Caste, various communities are within the Scheduled Tribes. Odisha has 62 communities among the Scheduled Tribe population, 50 in Karnataka, 47 in Maharastra, 46 in Madhya Pradesh, 42 in Chattisgarh and 40 in West Bengal. In this paper, 11 communities have been taken for discussion as all

The Indian Geographical Journal
Volume 97 (2) December - 2022, pp 141-158
ISSN 0019-4824

A SPATIAL ANALYSIS OF THE DETERMINANTS OF PNEUMONIA DISEASE IN NORTH BASTAR KANKER DISTRICT, CHHATTISGARH, INDIA

Ashis Kumar Majhi [a]* and Krishna Nandan Prasad [b]

[a] Mohan Lal (Mohan Bhaiya) Jain Govt. College, Khursipar, Bhilai, Durg, Chhattisgarh - 490011
[b] Govt. Digvijay Autonomous PG College, Rajnandgaon - 491441
*Corresponding Author Email: ashismajhi619@gmail.com

Abstract

Pneumonia is a leading cause of morbidity and mortality among the major diseases in the tribal areas of Chhattisgarh, including the North Bastar Kanker district. Pneumonia contributes about 20 per cent of infant deaths and it is the 2nd highest cause of infant mortality (after prematurity and low birth weight)in the district. This disease has been chosen to investigate at the ground level because the factors behind its origin are both physical and socio-cultural.This paper attempts to investigate the causal relationship between the natural environment and the socio-cultural environment in instances of outbreak of pneumonia disease. It also tries to find out the spatial distribution of pneumonia cases in the North Bastar Kanker district. The study is based on both primary and secondary sources of data. Primary data on pneumonia cases and their socio-cultural determinants have been collected from sample households. The elevation map prepared using a 30-metre SRTM DEM (Satellite data), and drainage and vegetation maps prepared from Landsat-8 images were used as environmental indicators. Pearson's product-moment correlation coefficient has been used to find out the relationship between socio-cultural determinants and pneumonia disease. The Odds Ratio (OR) has been measured to understand the prevalence of risk and strengths of the relationship between exposure and non-exposure groups. The prevalence of pneumonia has a notable association with physical conditions and the socio-cultural determinants such as scheduled tribes population, illiterate people, unclean household environment, low family income, not maintaining personal hygiene and nature of housing condition.

Keywords: Spatial analysis, Determinants of Pneumonia, Natural environment, Public health

Introduction

Pnuemonia is defined as a change in living tissues that endangers the survival in an environment. It is intimately related to the natural and socio-economic environment. Spatial epidemiology deals with the geographical distribution of diseases and it is a holistic approach that involves the interactions and associations between the elements of physical and socio-cultural environments. Pneumonia is one of the leading public health issues worldwide and

IRJMSH Vol 14 Issue 4 [Year 2023] ISSN 2277 – 9809 (Online) 2348–9359 (Print)

मानपुर विकासखण्ड क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं का एक मूल्यांकन

शोधार्थी

टिकेश्वर कुमार वर्मा
शास. दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर
महाविद्यालय राजनांदगाँव(छ.ग.)

शोध निर्देशक

डॉ. कृष्ण नंदन प्रसाद
सहायक प्राध्यापक, भूगोल
शास. दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर
महाविद्यालय राजनांदगाँव(छ.ग.)

सारांश

यह स्थिति ग्रामीण आदिवासी क्षेत्र मे
भारत देश के ग्रामीण क्षेत्र विकास की दृष्टिकोण से आज भी पिछड़ा हुआ है खासकर यह स्थिति ग्रामीण आदिवासी क्षेत्र मे
ज्यादा देखने को मिलता जिसका कारण शिक्षा, स्वास्थ्य, बेरोजगारी, मूलभूत सुविधाओ का अभाव आदि है। इसमे लोगो का
स्वास्थ्य प्रमुख ह जिसका वितरण प्रतिरूप क्षेत्र मे असमानता जो क्षेत्र क सामाजिक–आर्थिक विकास म अवरोध पैदा करता है।
देश को आजादी मिलने के बाद भारत सरकार द्वारा स्वास्थ्य सुविधाओं मे गुणवत्ता पूर्ण सुधार करने हेतु कई समिति, योजनाओ
व कार्यक्रम का संचालन किया गया जा रहा है जैसे 1943 भोर समिति, 1959 मुदालियार समिति, 1963 चड्ढा समिति, 1964
जंगलवाला समिति, 1965 मुखर्जी समिति, आदि। इन्ही तथ्यों को ध्यान मे रखकर मोहला–मानपुर–अंबागढ़–चौकी जिला के
मानपुर विकासखण्ड जो आदिवासी क्षेत्र है। जहा लोगों के स्वास्थ्य सुविधाओं का पता लगाने के लिए अध्ययन किया गया है।
इसके लिए द्वितीय आंकड़ों कके स्रोत को आधार मानकर आंकड़ा का संग्रहण का विश्लेपण व वर्णन किया गया है। अध्ययन
करने पर निष्कर्ष यह निकलता है कि क्षेत्र मे स्वास्थ्य देखभाल मे लगे मानव शक्ति संसाधन एवं जनसंख्या का अनुपात अन्तर
है यह निर्धारित मानक मापदण्ड से अधिक है जो स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली मे लगे स्वास्थ्य कार्यकर्ता पर अतिरिक्त भार को
बतलाता जिसके कारण लोगों को समय पर बुनियादी स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध नही हो पाता ह, जो खराब स्वास्थ्य स्थिति को
बतलाता है। जिसका असर सीधा लोगों के जेब पर पड़ता है यह उनकी खराब आर्थिक स्थिति का कारण बनता है कई लोग
स्वास्थ्य के देखभाल मे खर्च का वहन नहीं कर पाते है जिससे उनकी जीवन अवधि कम हो जाति है। इन सभी वजह से भारत
सरकार अपने लक्ष्य से अभी भी दूर है, परन्तु सरकार द्वारा मूलभूत स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने की दिशा मे अपनी महत्तवपुर्ण
भूमिका का निर्वाहन कर रही है जिसे हम नकार नही सकते है। स्वास्थ्य देखभाल ढाँचा मे सुधार हेतु जनसंख्या के अनुपात मे
नयी सेटअप का निर्माण करना चाहिए ताकि ग्रामीण क्षेत्र के लोगो के स्वास्थ्य मे सुधार हो सके।

परिचय

यह एक महत्वपूर्ण संसाधन होने के साथ उपभोक्ता भी है क्योंकि मनुष्य
मनुष्य भौगोलिक पर्यावरण का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। यह एक महत्वपूर्ण संसाधन होने के साथ उपभोक्ता भी है क्योंकि मनुष्य
ही पर्यावरण मे मिलने वाले प्राकृतिक व सांस्कृतिक साधनों का अपने आवश्यकता के अनुरूप परिवर्तित कर उपयोग करता है।
यह किसी भी देश, प्रदेश के सर्वागीण विकास का आधार है, यह विकास लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, मूलभूत सुविधाओं
इत्यादि से जुड़ा हुआ है। इसमें मानव स्वास्थ्य का स्थान सबसे बढ़कर है क्योंकि एक स्वस्थ्य व्यक्तिगत ही एक स्वस्थ्य समाज
का निर्माण कर सकता है जो लोगों के स्वास्थ्य, स्वास्थ्य की गुणवत्ता, कार्य करने की कुशलता, उत्पादन की क्षमता, मानव
संसाधनो के विकास और देश के प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है। लेकिन यह सुविधा सभी क्षेत्र में समान रूप से उपलब्ध हो
यह संभव नही है, जो देश के सामाजिक–आर्थिक विकास की दशा व दिशा बतलाता है। सिंह (2019–2021) ने कहा कि
स्वास्थ्य किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण मानदंड है जो मानव कल्याण का महत्त्वपूर्ण तत्व है। किसी भी व्यक्ति
की स्वास्थ्य स्थिति उसकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति और स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं से प्रभावित होती है।

यह समस्या अधिकांशता आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों में देखनें को मिलता है। भारत मे ऐसे कई राज्य व क्षेत्र है जहाँ
इनकी बहुलता पाई जाती है जैसे – म.प्र., झारखण्ड, महाराष्ट्र, उड़ीसा, अरूणाचल प्रदेश, राजस्थान, प. बंगाल आदि।

छत्तीसगढ़ राज्य भी एक आदिवासी जनाधिक्य वाला राज्य है जिसकी स्थापना 1 नवंबर 2000 का भारतीय संविधान
के अनुच्छेद–3 के अंतर्गत देश के 26 वां राज्य के रूप मे किया गया। यहाँ आदिवासी जनसंख्या राज्य के कुल जनसंख्या का
30.62 प्रतिशत है। कई जिलों मे इनकी आबादी 75 फीसदी से भी अधिक है जैसे – नारायणपुर, सुकमा, कोण्डागॉव, जशपुर
आदि। इन्हीं जिलों मे राजनांदगॉव जिला से अलग होकर बना नवीन जिला मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी भी एक आदिवासी
प्रधान जिला है जो आज भी अभावों में है परिणामतः क्षेत्र मे मृत्यु दर अधिक, कुपोषण, बेरोजगारी आदि के कारण क्षेत्र मे

Education and Society (शिक्षण आणि समाज)
(UGC Care Journal)
ISSN: 2278-6864
Vol-46, Issue-4, No.07, July-September: 2023

आंगनबाड़ी केन्द्रों पर मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य देखभाल का एक विश्लेषण आदिवासी क्षेत्र अंबागढ़–चौकी विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में

टिकेश्वर कुमार वर्मा शोधार्थी, tikeshwarkumarv@gmail.com
डॉ. कृष्ण नंदन प्रसाद शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, भूगोल, krishnanadan112@gmail.com
शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव(छ.ग.)

सारांश

ग्रामीण आदिवासी के स्वास्थ्य में गिरावट का प्रमुख कारण निम्न पोषण या असंतुलित पोषण आहार है फलस्वरूप लोग कुपोषण के जाल मे फस जाते हैं। आज विश्व मे 76.8 करोड कुपोषित जनसंख्या में भारत 1/4 अर्थात 22.4 करोड लोगो को भरपेट भोजन नही मिल रहा जिसके परिणामत यह कुपोषण के शिकार हो जाते हैं। यह समस्या देश के सभी राज्यो मे भिन्न है, छत्तीसगढ राज्य में इनकी संख्या लगातार बढती जा रही है जिसका प्रभाव मातृ मृत्यु दर में वृद्धि, प्रसव के दौरान मृत्यु, शिशु मृत्यु दर, 5 वर्ष से कम बच्चों में मृत्यु, खून की कमी जैसे कई समस्या हमारे सामने उभरकर आ रहें हैं। इन्ही तथ्यों को ध्यान में रखकर मोहला–मानपुर–अंबागढ–चौकी जिला के अंबागढ–चौकी विकासखण्ड क्षेत्र जो एक आदिवासी क्षेत्र है। इसके लिए विकासखण्ड के 33 आंगनबाडी केन्द्र का चयन कर सर्वे किया गया है ताकि केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा माताओं और शिशुओं के स्वास्थ्य में सुधार हेतु संचालित कार्यक्रमों और योजनाओं का मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पर हुए परिवर्तन का अध्ययन किया जा सके।

इस अध्ययन हेतु प्राथमिक व द्वितीयक आंकडो का संग्रहण कर विश्लेषण व वर्णन किया गया है। अध्ययन दर्शाता है कि छ.ग. में कुपोषण की समस्या आज भी बरकरार है। यह समस्या अन्य जाति समूह कि अपेक्षा विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्र में आदिवासी लोगो में ज्यादा देखने को मिला है। जनजाति में प्रति हजार जीवित पर 58 बच्चों की मृत्यु पाया गया है। अंबागढ–चौकी वि.ख. में शिशु मृत्यु दर 2019–20 में 40.44 प्रतिशत से 2022–23 में 12.15 प्रतिशत हो गया। मातृ मृत्यु दर 2019–20 में 95.15 प्रतिशत से 2022–23 में 55.25 प्रतिशत हो गया। इसमें कमी होने के पीछे विशेष रूप से एकीकृत बाल विकास कार्यक्रम के माध्यम से आंगनबाडी केन्द्र द्वारा बच्चों और माताओं को प्रदाय पोषण आहार व अन्य सेवाओ के कारण स्थिति में सुधार हुआ है। आज भी 67.2 प्रतिशत बच्चें व 60.5 प्रतिशत माताएँ एनीमिया से जुझ रहें हैं। अध्ययन से पता चलता है कि आंगनबाडी में काम का भार अधिक होने के साथ कुछ आंगनबाडी 1 कार्यकर्त्ता द्वारा संचालित किया जा रहा है तो कुछ मे मूलभूत सुविधाओ का अभाव, जर्जर भवन के लिए मरम्मत हेतु फंड न होने की बात कही गयी है।

आंगनबाडी के 21 गंभीर कुपोषित बच्चों पर t-test परीक्षण किया गया। परीक्षण से ज्ञात हुआ कि परिकलित t value (5.8) का मान p 0.05 पर critical value (2.093) के मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना – "आदिवासी क्षेत्र में गंभीर कुपोषित बच्चों में ऊँचाई व वजन मे सार्थक संबंध नहीं है" निरस्त की जाती है। इसका अर्थ है – गंभीर कुपोषित बच्चों में ऊँचाई व वजन में सार्थक सह–संबंध है ऐसा इसलिए संभव हुआ है कि आंगनबाड़ी केन्द्रों पर बच्चों के कुपोषण की दिशा मे सकारात्मक सुधार हुआ है।

मुख्य शब्द : आंगनबाडी, पोषण, कुपोषण, मातृ, शिशु, स्वास्थ्य, आदिवासी।

परिचय

भारत की गिनती विश्व के विकासशील देशों में होता है। यह अपनी संस्कृति, रीति–रिवाज, परम्परा म विविधता के कारण विश्व में अपना विशिष्ट पहचान बनाया हुआ है। यहाँ की आबादी का बड़ा हिस्सा ग्रामीण इलाकों मे रहता है। जनगणना 2011 के अनुसार भारत की जनसंख्या 121.02 करोड था, जो वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र की विश्व जनसंख्या रिपोर्ट के मुताबिक यह 1 जुलाई 2023 को भारत की आबादी 1.429 अरब के साथ चीन को पछाड़कर दुनिया में सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन गया है। भारत की बढ़ती हुई आबादी देश के सामने एक चिन्ताजनक स्थिति का द्योतक है, परिणामतः देश में बेरोजगारी, आय में कमी, निम्न जीवन स्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण आहार में कमी के रूप में देखने को मिलता है। इसमें स्वास्थ्य और पोषण एक महत्वपूर्ण कारक है, स्वास्थ्य मानव की मूलभूत आवश्यकता है यह मानव अधिकार भी है जिसे समाज के सभी वर्ग का पहुँच होना चाहिए इसलिए "गुड हेल्थ एवं न्यूट्रिशन फॉर ऑल" का नारा दिया गया है।

स्वास्थ्य और पोषण जो न केवल व्यक्ति के विकास, मानव स्वास्थ्य, उत्पादन क्षमता के साथ ही यह देश की उन्नति का सूचक होता है तो वहीं दूसरी ओर कुपोषण व्यक्ति के स्वास्थ्य वृद्धि एवं विकास पर ऋणात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है। गर्भावस्था के दौरान, बाल्यावस्था के 2 साल में कुपोषण होने पर शिशु के मानसिक और शारीरिक विकास पर स्थायी छाप छोड़ता है, क्योंकि कुपोषित बच्चे में कोई भी बीमारी आसानी से

15. Workshop Attended by the Faculty

Name of the Faculty	Name of Workshop	Organized by	Date
Dr. K. N. Prasad	Remote Sensing and GIS	Department of Geography	04-11 Oct. 2023
Dr. Shraddha devi Sahu	Remote Sensing and GIS	Department of Geography	04-11 Oct. 2023
Mr. Hemraj Daura	Remote Sensing and GIS	Department of Geography	04-11 Oct. 2023

16. Research Papers Presented in Seminar by the Faculty

Name of the Faculty	Name of Seminar	Organized by	Date	Title of the Paper
Mr. Hemraj Daura	National Seminar On "Situational Formation : Opening New Vistas of Research in Geo-science"	Department of Geography	1-2 March 2024	"Climate Change"

17. Seminar Attended by the Faculty

Name of the Faculty	Name of Seminar	Organized by	Date
Dr. K. N. Prasad	National Seminar On "Situational Formation : Opening New Vistas of Research in Geo-science"	Department of Geography	1-2 March 2024
Dr. S. Jenamani	National Seminar On "Situational Formation : Opening New Vistas of Research in Geo-science"	Department of Geography	1-2 March 2024
Dr. Shraddha Devi Sahu	National Seminar On "Situational Formation : Opening New Vistas of Research in Geo-science"	Department of Geography	1-2 March 2024
Mr. Hemraj Daura	National Seminar On "Situational Formation : Opening New Vistas of Research in Geo-science"	Department of Geography	1-2 March 2024